"प्रकृति पर मानव का हस्ताक्षेप"

* भूमिका।
* आज की इक्कीसवीं सदी में प्रकृति और प्रदूषण।
* मानव का हस्ताक्षेप पर प्रकृति का जवाब।
* हमारा जीवन का संरक्षक है प्रकृति ?
* प्रकृति में हरियाली का पुनस्थापन, हमारा कर्तव्य।
* आज का विद्यार्थी, कल का नागरिक।
* उपसंहार।

* भूमिका

"प्रकृति में सबकुछ है हमारा जरूरत पूरा करने के लिए पर कुछ नही है, हमारा लालच पूरा करने के लिए"

- महात्मा गाँधीजी

महात्मा गाँधीजी का यह वचन बिलकुल सही है क्योंकि हमारा जरूरत के लिए प्रकृति शुद्ध वायु, पानी, और प्राकृतिक संसाधन आदि देता है। लेकिन मानव अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए प्रकृति का नाश करने

लगा और इसी वजह से आज शुद्ध वायु भी नही मिल सकता है। इसका एक उचित उदाहरण है अब दिल्ली में २९९ रुपया के लिए शुद्ध वायु का व्यापार होता है। यह बहुत दुःख की बात है कि शुद्ध वायु के लिए भी हम पैसा देना पड़ता है। आज हमारा चार तरफ में सिर्फ बड़े-बड़े मकान ही देख सकता है हरियाली नही। आजकल हरएक क्षेत्र में बदलाव आया है ऐसे हमारा प्रकृति में भी बदलाव आया है। हमारा पूर्वजों ने प्रकृति को भगवान जैसे मान किया था और इसका कारण से वह समय प्रकृति में कोई हस्ताक्षेप नही था, सिर्फ हरियाली था। जब मानव का सोच में बढ़ाव हुआ तब स्वार्थ की जन्म भी हुआ है। हर साल करोड़ पेड़ों का नाश होता है और इसी वजह से वहाँ रहनेवाली जीव-जन्तु का हालत भी बुरा होता है। अगर आज हम इस के खिलाफ आवाज नही उठा तो भविष्य में हमारा धरती काला

होजाएँगा।

* आज की इक्कीसवीं सदी में प्रकृति और प्रदूषण।

"पर्यावरण की रक्षा, हमारा सुरक्षा"

जब हम प्रकृति और पर्यावरण का ~~सुरक्षा~~ रक्षा करता है तब प्रकृति हमारा सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। लेकिन आज का इस ~~है~~ इक्कीसवीं सदी में प्रकृति पर मानव की हस्ताक्षेप बढ़ रहा है और इसी वजह से प्रदूषण, भूगोल तापमान जैसे समस्याएँ भी बढ रहा है। आजकल बहुत ज्यादा नदीयों जैसे गंगा और ~~जम~~ यमुना में शुद्ध जल नहीं मिल सकता है, वहाँ कचरा भी बढ़ जाता है। दिल्ली में व प्रदूषण हर ~~दिन~~ दिन बढ रहा है और वहाँ लोगों अपना नाक बंद करके शहर में चल रहा है। आजकल 'प्लास्टिक' हमारा प्रकृति के लिए खतरा बन गया है। आज समुद्र में भी कचरा डालता है और इसी वजह से पूरा धरती

~~क~~ खतरा में जी रहा है। भूगोल तापमान की वजह से ~~म~~ मौसम की सन्तुलना नष्ट होता है और गर्मी बढ रहा है। इससे हम समझ कर सकते है कि जो प्रकृति हमारा जीवन का संरक्षक होता है वह प्रकृति में हमारा जिंदगी खतरा में है। हर एक जीव जन्तु धरती में जीने के लिए मुश्किल सहन करना है। बढती प्रदूषण की वजह से कैंनसर जैसे बीमारीयाँ भी होता है। आज हमारा ~~व~~ जिंदगी गाडीयों और कारखाना का धुँआ के बीच होता है। भारत पर्याटन के लिए बहूत अच्छा जगह है, ~~ल~~ पर आज का हालत ~~से~~ में पर्याटन ~~एक~~ करनेवाली लोग भी मुश्किल महसूस करता है। हम सब ऐसे सोचना चाहिए कि प्रकृती संरक्षण के लिए मुझे क्या कर ~~क~~ सकता है। आजकल मानव की सोच ऐसा है सिर्फ मुझे क्या कर ~~कर~~ सकता है? यह सोच में बदलाव ~~बन~~ होना चाहिए अगर एक प्रकृति के लिए एक छोटा बात किया तो वह प्रकृति के लिए बहूत बडा शहन होगा।

मानव का हस्ताक्षेप पर प्रकृति का जवाब।

"प्रकृति से मत खेलो ~~प्रकृति~~ क्योंकि प्रकृति का ताकत के सामने हम कुछ नही है"

हमारा हस्ताक्षेप पर प्रकृति का ~~जब~~ जवाब है दो साल आया बाढ़। बाढ़ हमारा पूरा दौलत को नाश कर दिया। 2018 में केरल में हुआ बाढ़ में 12 लाख घरों नष्ट होगया 10000 अभयार्थी कैंप शुरु किया। केरल का 54 बाँधी में 35 खुला दिया है। सबसे ज्यादा बहुत सारे लोग को अपना ~~ज~~ जिंदगी नष्ट हुआ। ~~भुस्खलन की वजह से ज्यादा लोग मिट्टी के अंदर मर~~ 2019 में ~~भुस्खलन~~ बाढ़ का प्रभाव कम था, फिर भी बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। केवल बाढ़ ही नही ~~अ~~ ~~लेक~~ बहुत सारा प्राकृतिक आपदि भारत में अक्सर बन गया है। ऐसा एक हालत में यह हमारा कर्तव्य है कि प्रकृति ~~प्र~~ का संरक्षण करें। प्रकृति बहुत शक्तिशाली है, प्रकृति का ~~न~~ ताकत के

सामने हम कुछ नहीं है। अगर प्रकृति अपना पूरा शक्ति प्रकट कर दिया तो उसका फल, बड़े नुकसान ही होगा। प्रकृति का संरक्षण के लिए अब बहुत देर ~~हो~~ होगया है, इसलिए हम अब प्रकृति संरक्षण के लिए आगे ~~बढ़~~ बढ़ना चाहिए। ~~अगर~~ अगर नहीं है तो ~~आँधी जैसे~~ आँधी जैसे तूफान और हर साल आनेवाली बाढ़ में हमारा जिंदगी नष्ट होजाएँगा।

* क्या प्रकृति हमारा जीवन का संरक्षक है?

प्रकृति हमारा संरक्षक है। लेकिन जब हम स्वार्थी में डूब होता है, तब प्रकृति भी बदलता है। प्रकृति हमारा माँ है। एक माँ अपना बच्चों का गलती में जरूर सज़ा दूगा। ~~जैसे है प्रकृति भी~~ प्रकृति भी जैसे है। हम अपना प्रकृति माँ का संरक्षण जब करता है, तब प्रकृति हमसबको मदद करेगा।
~~संक्ष~~ संयुक्त राष्ट्र संगठना (यूएन ओ) की

(Margret Thatcher)
मौसम समीट में "मारग्रेट ~~थाचर~~ तान्चर" ~~न~~ नामक एक लडकी प्रकृति ~~का~~ ~~रूर~~ में होनेवाली मानव की हस्तक्षेप पर अपना आवाज उठा है। भारत में गया "रतिमा पांडे" (Rathima Pandey) भी अपने सशक्त ~~व~~ वचन से लोगों का मन में स्थान लिया है। अगर , ग्यारह साल का लडकीयों ~~उठा~~ को अपने आवाज उठ सकते है तो क्यों हम लोग चुपकर बैठता है, इसलिए हम प्रकृति के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

* प्रकृति में हरियाली का फैलापन, हमारा कर्तव्य।

"जब हमारा प्रकृति का अंतिम पेड ~~काटे~~ काटता है, जब हमारा प्रकृति का अंतिम हरियाली नाश होता है तब हम समझकर सकते है कि पैसा को खा नहीं सकता है"

जब हम पैसा के लिए प्रकृति का नाश करता है तब यह वचन हमारा मन में होना चाहिए। प्रगति के नाम पर प्रकृति का नाश करना

बहुत बुरा बात है। प्रगति के लिए प्रकृति का नाश करना हमारा जिंदगी के लिए एक बड़ा खतरा है। केरल का कुतीरान सुरंग मैं को नाश करके हुआ प्रगति ~~हमा~~ मानव के लिए बहुत खतरनाकी बन गया है। वहाँ ~~भ~~ यात्रा करने के लिए लोग डरना है और वहाँ गाड़ी चलाना ~~ब~~ एक मुश्किल बन गया है। यह बिलकुल प्रगति ही नहीं सिर्फ प्रकृति का नाश है। प्रगति हमारे लिए बहुत जरूर है ~~ह~~ वह प्रकृति को नाश करके नहीं होना चाहिए। अगर दोनों ~~साथ~~ एकसाथ हुआ वह अच्छी बात है। प्रकृति में हरियाली ~~क~~ का पुनस्थापन करने के लिए कारबण न्यूट्रल नीति एक अच्छा तरीका है। यह एक ऐसा तरीका है जिसमें हम एक भारतवासी तीस पेड़ों लगाना ~~ब~~ तो दस साल के बाद हरियाली ही हम ~~स~~ देख सकता है। महाराष्ट्र में यह ऐसे ~~व~~ किया है और इसी वजह से हरियाली का पुनस्थापन कर सकता है। एकसाथ हम आगे बढ़ाया तो जरूर हमारा प्रकृति

हरियाली का पुनस्थापन होगा।

* आज का विद्यार्थी, कल का नागरिक।"

आज का विद्यार्थी, कल का नागरिक होना है। हम विद्यार्थी प्रकृति संरक्षण के लिए आगे बढ़ना चाहिए। हमारा विद्यालय में पेडों लगाकर विद्यालय में हरियाली बनना चाहिए। घर में, अपना पास पडोस में सभी जगह में पेड लगाकर एक नया प्रकृति का निर्माण हम करना चाहिए। हमारा सरकार का स्वच्छ भारत अभियान में हम भाग लेना है ~~ओं~~ चाहिए और प्लास्टिक को पुनःक्रमण करके प्रकृति को बचाना चाहिए। ~~इस~~ गाँधीजी का एक महत्वपूर्ण सपना था हरियाली से भरा एक प्रकृति। हम उसके लिए वह सपन के लिए आगे बढ़ना है। हम विद्यार्थी हमारा भारत का भविष्य है इसलिए आज हम अपना प्रकृति के लिए

कुछ किया तो हमारा आनेवाली पीढी को इधर जी सकता है।

उपसंहार

प्रकृति हमारा माँ है। प्रकृति का नाश करने से सिर्फ प्रकृति नहीं जानवरों का जिंदगी भी मुश्किल में होता है। आजकल हर दिन जानवरों मर जाना है, अगर इस हालत बढ गया तो भविष्य में हमारा जरूरत पूरा करने के लिए कोई जानवर न होगा। मानव की जिंदगी प्रकृति पर निर्भर रहता है। प्रकृति संरक्षण के लिए हम बहुत सारे काम करना है, लेकिन वह बदलाव नहीं बनना है। एकसाथ हरएक प्रकृति संरक्षण के लिए आगे बढना चाहिए। तभी ही हमारा प्रकृति में हरियाली होगा। कारखाना में धुआ को अच्छी तरह से मिटाना चाहिए। प्रकृति संरक्षण के लिए जागरूकता कक्षा भी हम

कर सकता है। जब भारत में ~~प्रकृत~~ एक नया प्रकृति का निर्माण ~~होना~~ होना है तब हमारा भारत विकसित बन सकता है। प्रकृति में देवा करने की शक्ति भी शामिल है। इसलिए ~~हम~~ हमारा जिंदगी प्रकृति पर निर्भर ~~रहना~~ रहता है। इसलिए हमारा प्रकृति माँ का संरक्षण हमारा कर्तव्य है। प्रकृति से हमारा रिश्ता बहना चाहिए और हम प्रकृति का साथी होना चाहिए। नया प्रकृति का निर्माण हम सब का कर्तव्य होता है।